तृतीय अध्याय

"शहर में घूमता आईना" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा

कथावस्तु की समीक्षा

` शहर में घूमता आईना ` उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा ---

` शहर में घूमता आईना ` उपन्यास ` अश्क ` जी के ` गिरती दीवारें ` उपन्यास की अगली कड़ी है। ` अश्क ` जी ने नायक चेतन को दर्पण की भाँति घुमाकर संपूर्ण जालंधर शहर के निम्न मध्य वर्गीय समाज को चित्रित किया है। ` शहर में घूमता आईना उपन्यास के कथावस्तु का विस्तार एक दिन का है। जिसको तीन भागों में विभक्त किया है, सुबह, दोपहर और शाम। यह कृति सैरबीन का सा ही आभास देती है। लेखक ने नायक चेतन द्वारा स्मृति रूप में अनेक छोटी-मोटी कथाओं को इस उपन्यास में एकत्र गुंफने का सफल प्रयास किया है। कुछ हद तक सफलता भी पायी है। लेखक नायक चेतन से यंत्र की हलथी घुमवाता जाता है, जिससे उसके जन्म स्थान जालंधर के निम्न मध्य वर्गीय जीवन के अनेक रोचकता पूर्ण, यथार्थ तथा जिन्दगी का हर एक पहलू चल चित्र की भाँति उभरकर हमारे सम्मुख आता है। ` अश्क ` ने चेतन के माध्यम से अपनी ही आप-बीती सुनायी है।

साली नीला की शादी विधुर अधेड़ मिलिट्री एकाउण्टेंट से हो जाने के कारण चेतन उदास हो उठा था। उसका अवचेतन मन रह-रह कर उन भूली बिसरी स्मृतियों में खोया खोया सा हो खो जाता है। सुबह उसके कानों में ` हूँ `, ` हूँ ` की आवाज आती है। यह हुँकार बहुत देर से उसके चेतना का दरवाजा खटखटाती रही, फिर उसे डरावना सा सपना दिखायी देने के कारण हड़बड़ा कर उठ बैठता है। पुरानी स्मृतियाँ उसे रह-रह कर याद आती हैं कि वह बस्ती के अड्डे पर अपनी भावी पत्नी को देखने के लिए मित्र मुल्कराज के साथ खड़ा है। छुट्टी हो जाती है और लड़कियों की टोलियाँ आने लगती हैं। तेरह चौदह वर्ष की एक लड़की हाथ में किताबें लिए उसके सामने से गुजर जाती है जिसकी एक उड़ती सी चंचल दृष्टि उसके मन को धड़काते हुए चली जाती है।

वह अपनी भावी पत्नी को देखे बिना ही चले जाना चाहता है मगर मित्र मुल्कराज के आग्रह के कारण उस मोटी पुटल्ली पत्नी को देखता है और नापास करता है। पिता के आदेश के कारण फिर उस भावी पत्नी को देखने जाता है मगर वहाँ फिर उसे उस चंचल लड़की को भावी पत्नी के साथ बैठा पाता है।)

चेतन अपनी बारात के भोज में बैठ जाता है, मगर उसका ध्यान खाने में न होकर उस दृष्टि के खोज में है। बाद वही लड़की अपनी सहेलियों का झुण्ड लेकर चेतन के पास आती है। और जीजाजी छन्द सुनाओं कहती है तब उसे पता चलता है कि वह लड़की उसकी पत्नी चन्दा के ताऊ की लड़की नीला है। वह उसे छन्द सुनाता है --

" छन्द परागे आइए-जाइए,छन्द परागे तीला,
छन्द गया मैं भुल स मै,। जद सामने आयी नीला।" [१]

(७) जब चेतन विवाह के बाद अपनी ससुराल में चौबारे लेटा है। नीला आती है,उसके गोद में एक पत्रिका रख देती है और पृष्ठ के पंक्ति पर ऊँगली रखकर उस कहानी का सम्वाद पढ़ने को कहती है --

" मैं कैसे कहूँ कि मैं तुम से प्रेम नहीं करता।" [२]

चेतन वह वाक्य मन ही मन पढ़ता है और नीला उसकी ओर कुछ विचित्र - हृदय की गहराइयों में डूब जाने वाली - दृष्टि से देखती है और चेतन कुछ समझने से पहले पत्रिका को वक्ष से लगाये एक बार मुड़ कर उसकी ओर देखती हुई भाग जाती है।

(चेतन अपनी ससुराल में छत पर लेटा है ,नीला उसके पास आती है, उसके घुँघराले और कोमल तथा लम्बे बालों की प्रशंसा करती है और बालों पर धीरे धीरे उँगलियाँ करती है। तब चेतन नीला का हाथ अपने हाथ में लेकर चुपचाप

---

१ शहर में घूमता आईना - अश्क - पृ.१७।
२ वही पृ.१७।

पड़ा रहता है। फिर कहता है कि जब दो बार चन्दा को देखने आया तो दोनों बार उसने नीला को देखा। तो नीला भी चेतन को दोनों बार देखा है कहती है और उसने कौन-सा सूट पहन रखा था यह भी बताती है। बाद में चेतन लाहौर चला जाता है और वहाँ से पत्नी को पत्र लिखता है मगर उसका इशारा परोक्ष रूप से नीला की ओर होता है।

चेतन लहौर से इलावलपुर में अपनी दूर की साली के विवाह के लिए आता है और बीमार हो जाता है। चेतन चौबारें में बीमार पड़ा है। उसे तेज बुखार है और गला भी सूज जाता है। चन्दा उसके पास नहीं आ पाती। उसके सेवा के लिए नीला को भेज देती है। चेतन को अपनी कमजोरी का एहसास हो जाने के कारण वह चन्दा से नीला को पास मत भेजने की बिनती करता है मगर चन्दा उसे समझाती है और उस पर विश्वास व्यक्त करती है। जब नीला ऊपर चौबारें में दूध लेकर आती है और शोर करते हुए बच्चों को भगाकर कुण्डी लगाकर चेतन के पीठ से सट कर बैठ जाती है और अपनी बाँह के सहारे दूध पिलाती है। और क्षणिक आवेश में आकर वह उसे चूम लेता है तो अपने आप को माफ नहीं कर पाता। साँझ के समय जब नीला के पिता आते हैं तो वह इशारों - इशारों में उन्हें सब कुछ बता देता है। और नीला की शादी जल्द बाजी में बर्मा के विधुर अधेड़ मिलिट्री एकाऊण्टेण्ट से हो जाने के कारण उसका दोषी अपने आप को समझ लेता है। उसके आँखों के सामने उसके प्यार का खजाना लुट जाता है मगर वह कमजोर और कायर की तरह चूपचूप बैठता है। इसका दोषी अपने आप को मानकर नीला से क्षमा याचना भी करता है मगर उसका मन उसे क्षमा नहीं कर पाता। वह अपने आप को इसका जिम्मेदार मान कर तड़पते रहता है।

चन्दा को जगाता है और उसका मुख चूम उसके साथ ही नीचे उतर आता है। इन सभी स्मृतियों को भूलाने के लिए शीघ्र तैयार होकर बाहर निकल जाता है। यहाँ से सुबह के आने की शुरुवात होती है। चेतन सर्व प्रथम

गली के ही मित्रों से मिलता है। जगदीश से उसे पता चलता है कि खत्री के बेटे अमीचन्द ने डिपो के कम्पीटीशन में सफलता प्राप्त कर ली है, तो यह सुनकर उसके मन में द्वेष तथा तिरस्कार के भाव जग जाते हैं। अनंत ने कवि रामदास के बारेमें पुछने के बाद कविराज को जी भर के कोसता है। अनंत के साथ नीचे आता है। वह और अनंत बाजार की ओर जा रहे थे कि सामने से बद्दा आता है, जिसका नाम निहालचन्द है। (बद्दे के मैट्रीक पास होने का किस्सा भी सामने आता है। वहाँ से वे लोग लस्सी पीने के लिए चाचा रामदित्ते के दुकान पर जाते है तो रामदित्ते हलवाई की कहानी याद आती है जो मनोरंजन कारी होने के साथ-साथ दु:खदायी भी है। रामदित्ता अपनी पहली पत्नी को प्रसव के समय क्रोधित होकर मारता है जिसमें उसकी मृत्यु हो जाती है। रामदित्ता सुन्दर तथा भोली भाली पत्नी को खो देता है। दूसरे स्थान पर शादी पक्की करके भी पं.गुरदासराम के कारण नहीं हो पाती। रामदित्ते के लिए शादी के सभी दरवाजे हमेशा - हमेशा के लिए बन्द हो जाते हैं। अन्त में हार कर हरलाल पंसारी की साह्यता से विधवा आश्रम से तीन सौ रुपये खर्च करके विधवा के साथ शादी करता है मगर वह भी एक दिन गहने, कपडे तथा कीमती वस्तुओं को लेकर भाग जाती है। इस कारण रामदित्ते के चहरे पर स्थायी रूप से बेजारी दिखायी देती है। जो भी कोई उसके पास आता उसकी उमर पुछता और शादी करने की सलाह देकर उसके मनमनसाख्त सा लाभ उठाता। छोटे-छोटे बच्चे भी उसका मजाक उडाते जिसके कारण रामदित्ता पागलों की तरह उनके पीछे दौडता और अपने अर्ध पागल - सा होने का सबूत देता है।

(चेतन को उसके दादा के भाई चुन्नी पागले को याद होती है।) चेतन के दादा पण्डित रूपलाल के तीनों भाई पागल थे जिनके कारण चेतन का `कुनबा` पागलों का `कुनबा` कहलाता था। दो भाई चेतन के जन्म से पहले ही परलोक सिधार गये थे। लेकिन (सबसे छोटा भाई चुनीलाल जो शहर में `चुनी पागले` के नाम से प्रसिध्द था)। इसी चुनीलाल का बेटा फत्तूराम भी उस समय पागल बने जाता है। जब माँ के क्रियाकर्म निबट कर दफ्तर आता है और पागल पन के

दौर में ही त्याग पत्र देकर, कपड़े फाड़ता हुआ और ' या हुसैन ' बार-बार दोहराता हुआ चला जाता है।

चेतन रामदित्ते के दुकान से निकलकर और अनंत से विदा लेकर वह अपने पुराने सहपाठी दीनानाथ के पास आता है। वह जिस प्रकार जरिये से हकिम बना और बाद लोगों को ठग ने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया। कम उम्र में शादी होने के कारण घर में बच्चों की बाढ़-सी आ जाती है। जिसके कारण दीनानाथ का हल पतला हो जाता है। चेतन दीनानाथ से अलग होकर निश्तर के घर से होते हुए हमीद से आ मिलता है। हमीद को मिलने के बाद चेतन को यह महसूस होता है कि अब पहला वाला हमीद नही रहा। बड़ी नौकरी पा जाने के कारण ऊँचा उठ गया है। हमीद के हेय दृष्टि से देखने के कारण चेतन भी उससे औपचारिक शिष्टता दिखाकर अलग हो जाता है। (हमीद की तुलना अमीचन्द से करते हुए अपनी आशाओं और सफलताओं के लिए चिन्तित हो उठा। चेतन जब सुबह घर से यह सोचकर निकला था कि वह अपनी पीड़ा भुलाये मगर उसे कहीं भी चैन नही मिला। उसने सोचा कि तत्काल लाहौर चला जाये दैनिक समाचार पत्र की नौकरी छोड़कर किसी तरह एम.ए.में दाखिल हो जाये, फर्स्ट डिवीजन में पास हो, डाक्ट्रेट करे और किसी कालेज में प्रोफेसर होकर किताब पर किताब लिखे जिस के कारण उसकी कीर्ति सूरज के प्रकाश की तरह दुनिया में फैल जाये। चेतन आगे बढ़ता है और साले रणवीर से भेंट होती है। हुनर साहब, निश्तर तथा रणवीर भी महाशय हंसराज आर्य की दुकान में बैठे है। हुनर साहब महाशय आर्य जी को गीता के दूसरे अध्याय का सीधा उर्दू अनुवाद सुनाकर और उसके छपाई के बहाने कुछ रूपये लेकर अपना तथा शागिर्दों के भोजन का इंतजाम करते है। वहाँ से वे लोग रास्ते में दोस्तो को मिलते - मिलाते सीधे खालसा होटल पहुँच जाते है। जहाँ उनकी भेंट शहर के नामी गुण्डो से हो जाती है जिनमें देबू, जगना और जिल्ला है। यहाँ पर सुबह का खण्ड समाप्त हो जाता है।

(दो पहर का परिच्छेद शहर के गुण्डो से आरंभ होता है । जिनमें बिल्ला, जगना और देबू प्रमुख है । ये तीनों मूर्ख समाज से लाभ उठाकर और अपना भावी जीवन गुण्डाई के जोर पर स्वर्णिमो बनाना चाहते हैं।) बिल्ला खिंगरा दरवाजा के पास ही कही रहता था । जो खिंगरा दरवाजा मास्टर खैरायतो राम के नाम से जाना जाता था और उनके आन्दोलन की याद दिलाता था । अब खिंगरा दरवाजा के नाम के साथ बिल्ले का नाम जुड गया था । जगना पुजारी का बेटा था जो पिता के कुसंस्कारों के कारण गुण्डा बन बैठा था तो देबू अपनी मॉ की कर्कशता और पीटाई के कारण गुण्डा हुआ था । ये तीनों मूर्ख दिन भर बिना मतलबका लडाई-झगडा करते थे । हर किसी अजनबी से बीना मतलब के उलझ जाते और उसे पीटते । सट्टा खेलना, पुलिस को रिश्वत देना, पकडे जाने पर हर बार छूट भी जाते ।

(चेतन को देखते ही देबू बडे प्यार के साथ पुछताछ करता है ।) चेतन हुनर साहब का परिचय मिर्चमसाला लगाकर देता है । देबू का भी परिचय हुनर साहब से करवाता है ।) और साथ ही माई का रिश्ता भी जोडता है, जिसके कारण देबू के आँख में चमक आ जाती है । वह अपने दोनों दोस्तों का परिचय हुनर साहब से करवाता है ।

(बालसा होटल में काफी भीड होने के कारण बैठने को जगह खाली न थी । यह बात देबू के ध्यान में आते ही वह तीन युवक बैठे थे उनके पास जाकर उनको उठने का आदेश देता है । दो युवक उठते है मगर एक युवक उठने से इन्कार करता है तब देबू और उसके युवक में झगडा होता है जिसमें बिल्ला भी शरीक होता है । उस युवक की पीटाई करके उसे वहॉ से भगा देते है । जिस पर चेतन और उनके साथी खाना खाने के लिए बैठते हैं ।(यह बात चेतन को खलता है ।) खाना खाने के बाद वे सभी लोग रास्ते से जाते जाते देबू और जगना के करामतों से भरपूर मनोरंजन पाते हैं । जिसके कारण चेतन के मनका बोझ थोडा हलका होकर वह भी उसमें रस पाता है ।(बाद में चेतन, हुनर, निश्तर तथा रणवीर उन तीनों से अलग होकर विश्वा सहायक साप्ताहिक के संपादक लाला बाँकेराम से मिलने जाते हैं ।)

लाला बांशीराम को देखकर चेतन समझा जाता है कि वे कितने पानी में हैं। लाला बांशीराम महात्मा गांधी की सीधी सीधी नकल करते हैं। उनका कद कचिंत महात्मा गांधी के ही तरह लेम्बा था । उनके सामने के दो दांत टूटे थे । बोलते समय सोचने के ढंग में महात्मा गांधी को तरह होंटो पर उँगली रख लेते । उन्होंने अपनी बहन सरस्वती देवी को सेक्रेटरी बनाया था और चलते समय वे उसके कन्धे पर हाथ रखकर महात्मा गांधी की तरह थोडा झुककर चलते । सीधी-सीधी लाला बांशीराम महात्मा गांधी की नकल करते जो चेतन के नजरों में छुप नहीं सकी । चेतन लाला बांशीराम को एक नम्बर का ढोंगी समझता है । लाला बांशीराम ने महात्मा गांधी बनने में कोई कसर बाकी न रखी थी । लाला बांशीराम में महात्मा गांधी को बुध्दि का कितना प्रतिशत उनके भेजे में था, यह भी उसे मालूम नहीं पर शक्ल सूरत और आचार-व्यवहार से उन्होंने महात्मा गांधी बनने में कोई कसर बाकी न रखी थी । महात्मा गांधी जब जेल गये तो उन्होंने अपना रचनात्मक कार्य कुछ समय के लिए बाजू को रखकर वे भी जेल गये । उस समय महात्मा बांशीराम ही नहीं बल्कि हर प्रांत में कहीं न कहीं ऐसे महात्मा दिखायी देते थे । लाला बांशीराम की यही इच्छा थी कि दो आंखा की जनता उनका महात्मा गांधी के ही तरह या महात्मा गांधी समझकर सम्मान करें ।

"विधवा-सहायक" साप्ताहिक के कार्यालय से बाहर निकलकर चेतने और उसकी मित्र मंडली रास्ते के कीचड से बचते धीरे धीरे जा रहे थे कि सामने से टांगा आने के कारण चेतन बचने के लिए बायी ओर की दुकान पर चढ गया । तभी उसकी नजर सामने के चौडी दुकान पर लगे मण्डी सोडा वाटर फैक्ट्री के बोर्ड पर जाती हैं । चेतन को चाचा फकीरचन्द दिखायी देते हैं । और उसकी इच्छा सोडा पीने को होती हैं। तभी वह अपने पिता के मित्रों के स्मृति में खो जाता है ।

चेतन अपने पिता के मित्रों को चार श्रेणियों में विभक्त करता हैं । जिनमें पहली तरह के मित्रों में चौधरी गुज्जरमल और चौधरी तेजपाल को रख देता है ।

(जो शादी से पहले पं.शादीराम के गुण्डा पार्टी के प्रमुख सदस्य थे मगर शादी के बाद पूर्ण रूप से अपने संसार में लग जाते हैं)। चेतन की माँ उन्हें सच्चे मित्रों के श्रेणी में रखती हैं। जो दोनों कभी कभी चेतन की माँ के संकट के समय बुलाने पर मदद के लिए आ जाते। (दूसरी श्रेणी में देशराज आता है जो एक नम्बर का लुच्चा और लफंगा है।) पं.शादीराम का बचपन का मित्र था मगर एक नम्बर का नीच है। पं.शादीराम को ब्याज पर रूपया उधार देता है और फिर उसी रुपयों से शराब पीकर बाद वह रुपया पं.शादीराम से सूद समेत वसूल करता है। एक नम्बर का नीच और कुमित्र है। नीचता की कोई कमी उसमें बाकी नहीं है। उसके बाद (तीसरी श्रेणी के मित्रों में दौलतराज, मुकुन्दीलाल और बनारसीदास आते हैं)। जिन्हें पंजाबी में पिछलगुए कहते हैं। (जब तक पं.शादीराम जालंधर में रहते तब तक रोज आते और खाते पीते मगर बाद उनको सूरत न दिखायी देती। (पीठ पीछे सदा चेतन के पिता को भला बुरा कहते और उनकी निन्दा करते)। (चौथीश्रेणी में हरलाल और चाचा फकीरचन्द आते हैं। जिनके शिवाय पं.शादीराम की एक भी महफिल न होती) जिनमें हरलाल और चाचा फकीरचन्द न हो। वे कभी उनकी निन्दा न करते बल्कि आवाज देने पर चेतन की माँ के संकट समय पर चले आते। चाचा फकीरचन्द को देखते ही चेतन को उनकी पत्नी की याद हो आती है।

चाचा फकीरचन्द की बायीं आँख में बड़ी-सी फूली होने के कारण उनकी शादी उमर के चालीस साल तक नहीं हो पाती। एक दिन चेतन के पिता को सुन्दर मगर कुँवारी माँ बनने के कारण उसी लड़की के पिता किसी जरूरत, मन्द की खोज में होने का पता शादीराम को चलता है तब उन्हे अपने मित्र फकीरचन्द की याद होती है। बच्चा होते ही उस बच्चे को अनाथालय छोड कर उसका ब्याह चाचा फकीरचन्द से होता है। चाची को देखकर चेतन को भी आश्चर्य होता है कि इस उमर में इतनी सुन्दर पत्नी उन्हें कैसे मिली ? मगर माँ से सभी

राज चेतन को मालूम होता है। चेतन की माँ यह भी कहती है कि ऐसी फिर - निकलियाँ घर में कम ही टिकती हैं। मगर वाची यह कहावत गलत सिध्द कर देती है।

जब चाचा कफीरचन्द की सोडा वाटर फैक्ट्री से निकल कर पिता के बारेमें सोचता है कि चाहे पिता में कितने भी क्यों न दुर्गुण हो मगर उनके अपने मित्रों में उनका एक मान है,सम्मान है। उनके एक इशारे पर उनके मित्र उनके लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाते थे। चेतन को पहली बार अपने पिता से ईर्ष्या होती है। चेतन सोचता है कि उसका कोई ऐसा मित्र है ? उत्तर मिलता है नहीं। एक अनंत है मगर वह चेतन के लिए कुछ कर सकता है तो उत्तर नही पाता है। तब चेतन यह सोचता है कि अनंत के लिए उसने क्या किया है ? चेतन सोचता है कि उसका भी कोई ऐसा मित्र होता जो वह सुबह से-चलता हुआ फिर रहा है जो वह उसके पास अपने मन की बात कहता या कम से कम वह मित्र उसके साथ दिन भर आवारा घूमता।

चेतन अपने साथी हुनर,निश्तर और रणवीर के साथ जालंधरी मल 'योगी' के यहाँ आ जाता है। वहाँ आने के बाद उन्हें मूनीम द्वारा पता चलता है कि 'योगी' जो ध्यानस्थ हो गये हैं। चेतन और उसके सभी साथी ध्यानस्थ बैठे 'योगी' जी के पास जा बैठते है। ध्यानस्थ बैठे योगी जी को देखते ही चेतन को तुरंत पता चलता है कि 'योगी' जी कितने पानी में है। योगी जो ने आँखे खोलते ही नमस्कार करते हुए चेतन उनके जेल यात्रा और देश प्रेम पर व्यंग्यात्मक प्रश्न पुछ ताना कसता है। मगर जालंधरी मल 'योगी' बडे शांत भाव से उसका उत्तर देते हैं। जेल जाने के बाद उन्होंने जेल में धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया जिसके कारण इस मिथ्या संसार,आत्मा और परमात्मा का उन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ। यह जो संसार है वह माया के अलावा कुछ नहीं है। आत्मा ही सब कुछ है सब सुखों का मूल है। उसे पाकर ही मनुष्य परम सुख को प्राप्त करता है। संसार के सभी सुख और दु:ख से उपर उठ कर तथा इन्द्रियों को बस में करके ही अपने आप को आत्मा में लीन करना होगा। वह आत्मा जो ब्रह्म का ही

अंश है । तब चेतन कहता है कि आत्मा लीन करना इन्द्रियों को तकलीफ देने के बजाय मॉर्फिया के एक इंजेक्शन से ही आदमी उस परम शांति को प्राप्त कर है -- गहरी नींद की उस परम शांति को जिसमें कोई सपना न हो । मगर `योगी` जी कहते है कि मॉर्फिया का असर जब तक है तब तक ही आदमी शान्त रहेगा खत्म होते ही अशान्त हो जायेगा मगर ज्ञान योग के कारण सब सुख-दु:ख से उपर उठ सकता है । सच्चे शांति को प्राप्त कर सकता है । मगर चेतन यह सब आत्म-वंचना के अलावा कुछ भी नहीं है यह कहकर अपना मत व्यक्त करता है । यह भी कहता है कि भगवान ने इस सृष्टि का निर्माण किया है वह सर्व शक्ति मान है तो सब जगह एक जैसा न्याय नही है । सबल ही निर्बल को सा जाता है । सत व्यक्ति ही दु:ख पाता है । सब के साथ एक जैसा न्याय नहीं है । भगवान के अस्तित्व पर भी चेतन शक करता है । `योगी` जो यह सुनकर चेतन को नास्तिक कहते है । तब चेतन योग और कर्मयोग में जो विरोधाभास दिखायी देता है उसे स्पष्ट करता है । और चेतन यह तक कहता है कि मनुष्य परलोक पाने को फिक्र में इह लोक को भूल रहे है । पहले इह लोक को सफल बनाना चाहिए तब परलोक का सोचे । गरीबी,भुखमरी,अशिक्षा पहले खत्म करना है,मनुष्य का जीवन मान ऊँचा उठाना है । यही सच्चा सुख है,शान्ति है । योगी के थोथे ज्ञान पर व्यंग्य करता हुआ चेतन उन्हें नमस्कार करके वहाँ से उठ निकलता है । यही पर दोपहर का परिच्छेद समाप्त हो जाता है ।

चेतन जब जलंधरी मले `योगी` के यहाँ से `योगी` तथा अपने मित्रों से अलग होकर मण्डी बाजार को पार कर स्टेशन रोड तक आया तो उसका दिमाग फिर से आत्मा-परमात्मा,सुख-शांति,आनन्द और परमानन्द,ज्ञानयोग और कर्मयोग के चक्कर में फिर से उलझ जाता है । सोचते सोचते वह फिर इन सभी बातों और उसने पढी और सुनी बातों में उसे सच्चाई कम नजर आती है । यहाँ तक की माँ द्वारा दी गयी सीख और पिता के द्वारा सूने हुए उपदेशों में भी चेतन को बहुत फर्क महसूस होता है । पिताजी का उपदेश हो उसे एक तरफ से सत्य लगता है कि अगर तुम सच्चाई पर हो तो मत डरो भगवान ने तुम्हे बुध्दि

दी है, उसका प्रयोग करो, पूरी निष्ठा से मुकाबिले पर डट जाओ । तुम निश्चय ही जीत जाओगे । इन विचारों में चेतन को सच्चाई नजर आती है । बाद में चेतन की नजर फिल्मों के पोस्टर उठाये तथा नारे लगाये लड़को तथा कवि हरदयाल पर जाती है । चेतन फिर से पुरानी स्मृतियों में खो जाता है कि उसने और हमोद ने मिल कर किस प्रकार थियेटर मालिक मोहनलाल जो को बताया था कि चेतन की पत्नी बी.ए. है और वह फिल्मी पत्रिकाओं में लेख भी लिखती है । थियेटर मालिक से दोस्ती करके चेतन ने बहुत दिन तक फोकट में फिल्में देखी थी । सुलोचना, माधुरी, जुबैदा, सविता देवी आदि फिल्मी नायिकाओं की तुलना भी की थी । चेतन फिल्मी सोच में ही था कि उसका साथी लालू पीछे से आकर उसे चक्कर देता है तब चेतन होश में आता है । वह लालू से हालचाल पुछता है । तब मालूम होता है कि लालू सिगरेट की एजेंसी लेकर जम्मू - कश्मीर ही नही सारा हिन्दुस्थान घूम आया है । और अब उसे कंपनी जालंधर , होशियारपुर और कपुर्थला की एजेंसी दे दी है । तब यह सुनकर चेतन को अश्चर्य होता है कि मूर्ख कहलानेवाला लालू जो घर से कई बार भागा हुआ और अपनी नव विवाहिता अंगतुका पत्नी को स्टेशन पर ही छोडकर घर आया हुआ था जिसके कारण उसका नामकरण लोगों ने कद्दू किया था । मगर यह कद्दू कहलाने वाला आज सेठ बन गया है । चेतन को बडा आश्चर्य होता है, साथ-साथ मन में ईर्ष्या का भाव भी उत्पन्न होता है । मगर उस भाव को दबा कर चेतन सोचता है कि वह तो एक बुध्दिजीवी कथाकार, शक्ति-सम्पन्न पत्रकार और कहाँ यह ठस्स दिमाग का बनिया । यह सोचकर चेतन अपने मन को तसल्ली दे देता है ।

(चेतन लालू से अलग होकर अन्दो (अनन्दो) परिवार के बारे में सोचते हुए जा रहा है तभी उसकी भेट लाला गोविन्दराम से होती है । उन्ही से उसे राजनीतिक गतिविधि का पता चलता है और गोविन्दराम के स्मृतियों में खोकर वह उनके सच्चे देश प्रेम तथा सेवा का परिचय दे देता है)। वे किस प्रकार विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन चलाते है । उन दिनों लोग उन्हें गाँधी जी के स्थान पर अपना नेता मानकर उनके नाम के नारे लगाते थे । उन दिनों में

भवानिया जैसे हट्टी सुनार भी जो विदेशी वस्तुओं को प्रिय मानता था और उन्हें वस्तु का परिवार में प्रयोग करता था, जिस प्रकार से गोविन्दराम के हठ करने पर अन्त में हार कर उसे अपनी सर की पगड़ी उतार कर अग्नी में स्वाहा होने के लिए लाला जी के चरणों पर अर्पण कर देता है। और लाला जी की जित होती है। (गोविन्दराम से अलग होकर चेतन अपनी प्रथम प्रेयसी कुन्ती के स्वप्नों में खो जाता है। भले ही कुन्ती अब विधवा, हो गयी हो पर वह पुरानी स्मृतियाँ आज भी उसके मन को उल्लासित करती हैं। चेतन कुन्ती को एक झलक पाने के लिए मिलों चक्कर काटता था)। कुन्ती भी चेतन को देखने के लिए किस प्रकार बेचैन होतीथी। चेतन सोचता है कि कुन्ती दूसरों की हो गयी थी यह सही है पर उसका सुहाग तो बना रहता। उसका जीवन तो सफल होता। कुन्ती को खुश और सुखी देखकर वह भी सुख मनाता। पर यह नियती को मंजूर नहीं था। (अपनी ही अतीत की स्मृतियों में खोया हुआ चेतन सीधे सेठ हरदर्शन के कोठी पहुँच जाता है)। वीरभाई से नमस्ते करता है और वह उनके क्रांतिकारी विचार सुनता है। वह कहता हैकि चुनाव होंगे सिर्फ दिखावे के लिए जनता के नेता असंम्बलियों में जायेंगे, लेकिन असली सत्ता पूँजीपतियों के हाथ ही में होगी। (सेठ हरदर्शन से चेतन को यह भी मालूम होता है कि सेठ जो कॉंग्रेस के ही टिकट पर चुनाव लड़ने वाले है, यह सुनकर चेतन को हैरत होती है कि जिन्होंने न तो कभी कॉंग्रेस के आन्दोलन में भाग लिया न जेल गये। यह सुनकर उसे लाला गोविन्दराम और उनके सच्चे देश प्रेम की याद आकर उसका मन दु:खी हो उठता है। वहाँ से निकल कर चेतन आगे बढ़ता है तो उसकी भेट अपने पुराने सहपाठी लाला अमरनाथ से हो जाती है। लाला अमरनाथ के जिद्द और कार्य कुशलता की सरहना करता है)कि किस प्रकार उसने सिर्फ पाँच रुपये से दुकान शुरु की थी और आज पंज पीर से उठकर स्थानीय पुस्तक व्यवसाय के केन्द्र, मैरो बाजार में जम गया है। यह सुनकर चेतन खुश होता है और कहता है कि जिन्दगी से जुझना कोई तूम से सीखे।

चेतन अमरनाथ से छुट्टी लेकर पापड़ियाँ बाजार आ गया तो उसे झामानों का श्यामा से पता चला कि अमीरचन्द ने भागो का सर फोड़ दिया है । मगर यह क्या बात है पहले चेतन के समझ में नहीं आती बादमें हकीम दिनानाथ से उसे पता चला जाता है कि भागो उर्फ भागवती अपने बच्चों समेत तेलू के साथ भाग गयी थी । मगर वह अब तेलू और अपने बच्चों के साथ फिर से उसी मुहल्ले में रहने आयी तो अमीरचन्द ने अपना भाई डिप्टी कलक्टर होने के नाते और अपनी ही जाति की भागो एक ब्राह्मण तेलू के साथ भाग जाने के कारण तथा मुहल्ले में अपना रौब जागने के लिए मारकर उसका सिर फोड़ दिया है । जिसके कारण बात बहुत आगे बढ़ जाती है । (बात पुलिस तक जाती है। चेतन के पिता पंडित शादीराम का रौद्र रूप देख कर अमीरचन्द और उसके पिता पं. शादीराम से माफी माँगते हैं ।)

(चेतन जब पिता जी को सुला कर उपर बरसाती में पहुँचा । वह चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया । दिन भर आवारा घूमने के कारण उसके तन-बदन में दर्द हो रहा था । आँख सरकरा रही थी । (आँख बन्द करके सोने की कोशिश की तो उसे नीन्द न आयी - दिनभर की घटनाएँ, मित्रों-परिचितों के सम्वाद, मुहल्ले का हिंस्त्र-काण्ड- सब उसके दिमाग में जैसे चक्राकार घूमने लगे । बराबर वही दृश्य, उनकी सोच समझ और भाग दौड़ का सीमित क्षेत्र ... अनंत, बहा, देबू, प्यारू, रामदित्ता, हकीम, दीनानाथ, निरतर, रणवीर, हुनर, महात्मा और योगी, स्वयं सेवक और सेठ लालू और अमरनाथ, पण्डित जुल्याराम और मणिराम फिर सब से उपर उसके पिता ... इस वातावरण में और अधिक रहना उसके लिए असह्य है ।.... वह इस सीमित घेरे से उपर उठ जायगा)।* [१]

चेतन को मित्र अमरनाथ की याद हो आती है । दोस्तों ने उसका नाम 'सरचश्मा-ए-जिन्दगी' रख दिया था और उसने सचमुच वह नाम सार्थक कर

---

१ शहर में घूमता आईना - 'अश्क' - पृ.४१० ।

दिया था । अगर अमरनाथ जैसा ठस्स आदमी भी एक-निष्ठ होकर लगन से काम करने पर सफल हो सकता है तो वह क्यों नहीं हो सकता । (वह सोचता है कि उसका दिन भर घूमना बेकार नहीं गया । उसने जिन्दगी के स्त्रोत का पता लगा लिया है । वह अपने आप में लगन पैदा करेगा । कर्मठता को अपनायेगा । तूफानी नदी जिस तरह मार्ग में आनेवाले हर बाधा को हटा कर अपना मार्ग बनाती हुई चली जाती है वह भी तूफानी नदी की हो तरह परिस्थितियों पत्थरों को बहाता, चट्टानों को तोड़ता अपने उद्देश्य ओर बढा चला जायेगा)।

सोचते हुए उसके कानों में योगी जालंधरी मल के शब्द गुंजते - इस विशाल ब्रह्मांड में मनुष्य की हस्तीन के बराबर होते हुए भी वह क्यों मिथ्या सुख-समृध्दि, झूठे अभिमान के पिछे भाग कर अपनी सुख शांति, को नष्ट कर रहा है। वह इससे उपर उठ जायेगा । कर्म करते रहेगा, फलाफल की चिन्ता छोड देगा । जिन्दगी बेहतर बनायगा । सब संकुचितता से उपर उठेगा । वह कलाकार है, अपनी कला के द्वारा वह मानव के ज्ञान को रंच मात्र भी आगे बढा सके, इसका प्रयास करेगा ।

चेतन अपनी पत्नी के पास आता है वह अपनी मन की सभी बाते उसे बताता है कि उसके कारण ही नीला का ब्याह उस अधेड मिलिट्री एकाउण्टेण्ट से हो गया । नीला से हुई उसकी आखरी मुलाकात को भी बताता है । मगर चन्दा सब कुछ सुनकर उसे बडे शांत भाव से बताती है कि आप बेकार सोचते है कि नीला का ब्याह आप ही के कारण वहाँ हो गया है । आप अगर न बताते तो भी नीला का ब्याह वही होता । वैसी प्रमिला की इच्छा भी थी । तब (चेतन यह भी बताता है कि वह लाहौर जाकर अखबार की नौकरी छोड देगा । तो चन्दा इस बात को भी अनुमती देती हैं । और कहती है कि इसी नौकरी के कारण ही आपकी सेहत खराब हो रही है । और आप से नींद भी नहीं आती । यह बात सुनकर चेतन के दिल का बहुत बडा बोझ हलका होता है ।)

(चेतन ने तुरंत फैसला किया कि वह कल ही लाहौर चला जायेगा । और लाहौर की जिन्दगी में आपने आप को डुबो देगा । उसके पास जो है उस बेहतर बनाने का प्रयास करेगा । वह उपर उठने की कोशिश करेगा ।)

(चन्दा बडे प्यार से चेतन को अपने सीने से लगा लेती है -` चेतनको लगा, गर्मी और तपिश से जला-झुलसा,थका-हारा वह उसी विशाल झील के किनारे आ गया है - उसके ठहरे,तिथरे,गहरे ,निर्मल जल के किनारे ही उसकी नियति है, वह क्यों उससे दूर भागता हूँ, उसे सही ज्ञान नही मिलेगा, कही शान्ति नहीं मिलेगी ।` १

उपेन्द्रनाथ` अश्क` जी ने ` शहर में घूमता आईना` उपन्यास में चेतन के कथा के साथ साथ जालंधर के निम्न मध्य वर्ग के प्रमूख समस्याओं को चित्रित करने का प्रमूख रूप से प्रयास किया है। उनमें प्रमूख रूपसे सामाजिक-विषमता, कुण्ठा ,वैवाहिक समस्या,गुण्डा-गर्दी तथा राजनीति आदि का चित्रन हुआ है।)

सामाजिक- विषमता --

उपन्यासकार ` अश्क ` जी ने निम्न मध्य वर्ग की सामाजिक विषमता का चित्रन प्रमूख रूप से किया है । चेतन जब शिमला में स्कॅण्डल पॉयण्ट पर अपने सहपाठी अमीरचन्द को देखते ही तपाक से उसकी ओर हाथ बढाता है, पर अमीचन्द सिर्फ अनिच्छा पूर्वक हाथ की दो पोरे उसके हाथ से छुला देता है । तब चेतन यह महसूस करता है कि यह साला अमीचन्द रिजल्ट निकल ने से पहले ही डिप्टी हो गया है। सामाजिक - विषमता और संकीर्णता का चित्रण यहाँ देखने को मिलता है। चेतन और उसका मित्र हमीद जब दोनों साथ कालेज में पढते थे तब दोनों अभिन्न मित्र थे मगर जब हमीद ने रेडियो (प्रोग्राम) एसिस्टेण्ट बन जाता है तब वह चेतन से मिल कर केवल औपचारिकता ही निभाता है । चेतन को यह बात खलती है और वह कहता है कि सच ही कहा गया है, दोस्ती बराबरवालों

---

१ शहर में घूमता आईना -` अश्क ` पृ.४२५ ।

में होती है । यही से चेतन और हमीद दोनों मित्रों में दरारें पडती है। मित्रों में ही नही समाज में भी एक-दूसरे का अनिष्ट कैसे हो जाया यह काम भी होता था । जब रामदिते की सगाई होती है,तब पण्डित गुरदासराम मेहमानों से रामदिते के झूठी बिमारी का बयान करता है और उसकी सगाई तूट जाती है । चेतन की माँ एक जगह उपेक्षा से कहती है," बाहमन का बाहमन बैरी,कुत्ते दा कुत्ता बैरा ।" इस प्रकार समाज में एक-दूसरे के अहित के बारेमें सोचा करते थे । स्त्री लोग ब्राह्मणों को कुत्तेकी उपाधि से विभूषित करते थे । दोनों जातियों में हमेशा संघर्ष रहता था । दोनों जातियाँ एक-दूसरे को हमेशा नीचे दिखानेका प्रयत्न करते थे । जब तेलू के साथ मागवन्ती माग जाती है तब स्त्री दाँत - वाँट चबा जाते है,तो ब्राह्मण लोग खूश हो जाते है ।

उपेन्द्रनाथ ' अश्क' जी ने निम्न मध्य वर्ग का चित्रण बडे सुक्ष्मता से किया है । निम्न मध्य वर्ग के लोग कैसे जुआ खेलना,बेकार घूमना,या अपना किमती समय किस तरह बर्बाद करते है, उनको इसकी कोई फिकर नहीं है । दिनभर जुआ खेलना ही उनका काम है ।

' पापडियाँ बाजार और भी रौनक वाला बाजार न था,इस पर दुनियाजहान की चिन्ता छोडकर इन छिकली खेलनेवालों के कारण वहाँ एकदम बेजारी सी फैली हुई थी । लेकिन शहर में यही अपने जैसा अकेला बाजार न था । जालधर में ऐसे कितने ही बाजार थे (और आज तक भी है) जहाँ सुबह से लेकर शाम तक ताश शतरंज या चौपड की महफिले गर्म रहती है ।" १

दुनिया जहान की फिकर छोड कर दिन भर जुआ खेलना । जुआँ खेलते-खेलते झागडा करना । एक दूसरे को भला-बुरा कहना या एक-दूसरे के पूरखे गिने डालना यह नित्य ही होता था । बाद में सब कुछ भूल कर फिर एक जगह बैठ कर जुआँ खेलना यह नित्य का कर्म था ।

---

१ शहर में घूमता आईना - ' अश्क' - पृ.६८ ।

12543
A

कविराज रामदास जैसे ठगी वैद्य भी समाज में कम नही थे । सेक्स संबंधि किताबे लिखकर विज्ञापन बाजी द्वारा हजारों युवकों को फसाना इनका नित्य का कर्म था । एक प्रकार से छल,कपट,बेईमानी से रुपया कमाना और समाज का शोषण करना इन्होंने अपना कर्तव्य समझा रखा था । हकीम दीनानाथ जैसे युवक हकिम भी कम समय में ज्यादा रुपया कमाने के उद्देश्य से जाली दवा बेचते हैं । मगर पकडे जाने पर बदनामी होने की भी इन्हें परवाह नहीं है। छल,कपट, ठगी जैसा इनका कर्म ही बन गया है । कविराज रामदास चेतन को सेहत बनाने के बहाने शिमला ले जाता है और उससे सेक्स संबंधि किताब लिखवाकर ले लेता है, और उसे अपने नाम से छपवाता है ।

प.शादीराम जैसे लोग घर फूँक तमाशा देखनेका काम ही करते है । अपना पूराका पूरा वेतन शराब और शबाब उडाना,मौज-मजा करना,पैसा न होने पर कर्ज निकालना । बीवी-बच्चों को जानवरों की तरह पीटना । उनकी भावनाओं की कदर न करना । हर समय अपना ही आतंक जमाये रखना । यह लोग जैसा अपना कर्म ही समझाते है । रात-दिन नशे में धूत रहना । हर समय लडते-झगडते रहना । अपने और बीवी-बच्चों के स्वर्णिम भविष्य को राख में मिलाते हैं ।

चेतन का विचार था कि उसके पिता ने भी अमिचन्द के पिता की तरह उसके पढाई के लिए अगर कुछ रुपया रख देते तो वह भी खूब पढता ,खूब नाम कमाता। उसके नाम के भी चर्चे अमीचन्द की नाम की तरह चारों ओर होते । वह भी कोई अफसर बन जाता तो हमीद भी उससे दोस्ती करता । उसकी इज्जत करता । मगर पिता ने पत्नी और बच्चों को बात-बात पर गाली देना,पीटना, शराब जमाना,आदि बातों से दु:ख देने के अलावा कुछ नहीं किया ।

मानसिक कुण्ठा --

आज निम्न मध्य वर्ग का जीवन अनेक समस्याओं से घिरा पडा है ।हर जगह संघर्ष ही संघर्ष है । गरीबी,भूख,अज्ञान,अशिक्षा,बेकारी,अंध:श्रध्दा आदि का राज्य है । मन की कई इच्छाएँ मन में दबी पडी है। उसे पूरा करना असंभव है ।

उनके मन में कुण्ठा के रूप में पनप रही हैं।` अश्क` जी ने इसका मार्मिक रूप से चित्रन किया है --" इस अभावग्रस्त मुहल्लें में,जहाँ अशिक्षा,असंस्कृति,भूख और प्यास का राज्य था, जहाँ कई घरों में उमर भर के भूखे-प्यासे,कँवारे पड़े थे, अनाचारी,जुआरी,व्यभिचारी और पागल न हो तो और क्या हो ? क्यों बीमारियाँ पीढी-दर-पीढी यहाँ घर न करें और नस्लों को खोकली न बनाती चली जायें ? कई बार जब कोई कुँवारा काफी उमर गुजर जाने पर शादी करता या तो वह पहले ही यौनाव्याधियों का शिकार हो चुका होता और कई बार जब किसी युवा रँडुवे की दोबारा शादी न होती तो वह बाद में उन रोगों का ग्रास बन जाता या विक्षिप्त हो कर गली-गली मारा-मारा फिरता..."[१]।

निम्न मध्य वर्ग की कुण्ठा का चित्र बड़े मार्मिक शब्दों में अश्क जी ने व्यक्त किया हैं। निम्न मध्य वर्ग अनेक समस्याओं से घिरा पड़ा हैं। अमीरचन्द के मामा सोहनलाल का उदाहरण दिया गया है कि उन के पत्नी की मृत्यु के बाद वे अपना घर अमीरचन्द को देकर अपनी मनिहारी के दूकान पर चले जाते है। उनके बारे में यह अफवाह फैल गयी थी,` उनकी दुकान पर कोई-न-कोई सुन्दर लड़का अवश्य रहता। वह थोड़े दिन उनके साथ में हाथ बटाता,फिर चला जाता। मुहल्ले की औरतें अपने छोटे लड़कों को दुकान पर भेजने संकोच करती थी।"[२]

पं.शादीराम जब अमीरचन्द को ढूँढने के लिए लाला सोहनलाल के दुकान के चौबारे में जाते है तब उन्हें एक बारह-तेरह बरस का लड़का उनके बिस्तर पर सोया हुआ दिखायी देता हैं। जिसने मैली-सीनेकलर कमीज पहन रखी थी। इससे बड़ा सबूत लाला सोहनलाल के लिए और क्या चाहिए ?

` अश्क` जी दूसरा उदाहरण गण्डाराम और पं.जुलियाराम दोनों

---

१ शहर में घूमता आईना -` अश्क` पृ.६६।

२ वही पृ.४०३।

माइयों का दिया हैं । गण्डाराम मूँगी के लड्डू और पापड बेचता था और पं. जुलियाराम पोस्ट मास्तर था । गण्डाराम घर में कुछ न देता था । जो कुछ कमाता था वह शराब और जुए में उडा देता था । पण्डित जी अपनी मामी की सहायता करते थे । मगर लोगों को यह कब देखा जाता था । लोगों ने पण्डित जी पर लांच्छन लगाया कि वे अपनी मामी के साथ हैं । और उसके भाई को भडका दिया । दोनों भाई में कई बार झगडा भी हुआ और अंत में एक दिन गण्डा राम बीवी - बच्चों को छोडकर संन्यासी हो गया ।

पण्डित जी की बीवी दो लडकों को छोड कर परलोक सिधार गयी थी । उनका बडा लडका पागल और गूँगा था । इसलिए उन्होंने दूसरी शादी नहीं की । मामी की सहायता करते रहें । अंत में भाई के सन्यास लेने के बाद पण्डितजी ने मामी और उनके बच्चों को घर लाये । बडे लडके के गूम हो जाने के बाद उन्हें इतना क्षोभ हुआ कि रिटायर होते ही दाढी बडा ली और वेदान्ती हो गये ।' अश्क' जी पं.जुलिराम के दाढी बढाने और वेदान्ती होने के पीछे यही कारण बताया है,' हो सकता है,पण्डित जुलिराम का योग-साधना कुण्ठाओं से पलायन ही का दूसरा नाम हो ।' [१]

वैवाहिक समस्या --

उपेन्द्रनाथ' अश्क' जी ने' शहर में घूमता आईना' उपन्यास में वैवाहिक समस्याओं को प्रमुख स्थान दिया है । नायक चेतन भी इसी समस्या से ग्रसित हैं । चेतन कुन्ती से प्रेम करता है और उसीसे शादी करना चाहता है मगर पिता के दबाव में आकर चन्दा से शादी करता हैं । चन्दा को देखने जाता है तब चेतन नीला को दिल दे बैठता हैं । वह जानता है कि यह प्रेम सफल नहीं हो सकता क्योंकि नीला उसके पत्नी के ताऊ की बेटी है मगर चेतन फिर भी नीला से प्रेम करता हैं । नीला भी चेतन को अपना दिल दे बैठती हैं ।

---

१ शहर में घूमता आईना -' अश्क' पृ.४१३ ।

चेतन और नीला दोनों भी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं । चेतन जब बीमार होता है तब नीला उसकी सेवा सुश्रूषा के बहाने उससे एकदम करीब आती है । नीला जब दूध लेकर आती है और बच्चों भगाकर कुण्डी डालकर चेतन के पास बैठकर उसे दूध पीलाती है तब चेतन भावना विवश होकर नीला को चूम लेता है । शाम को जब नीला के पिता आते हैं तब चेतन इशारों-इशारों में उन्हें सब कुछ बताता है । और नीला की शादी जल्द बाजी में ब्रह्मा के अधेड विधुर मिलिट्री एकाऊन्टेण्ट से हो जाती है । चेतन का प्यार उसके आँखो के सामने लूट जाता है । चेतन इसका जिम्मेदार अपने आप को मानता है ।

निम्न मध्य वर्ग अनेक समस्याओं से घिरा पडा है । उनमें सबसे बडी समस्या शादी ब्याह की समस्या है । `अश्क` जी ने चाचा फकीरचन्द ,भागो ऊर्फ भागवती,रामदित्ता आदि की वैवाहिक समस्याओं विशद रूप से प्रस्तुत किया है । इसके साथ साथ विधवाओं की समस्याओं को भी विस्तार के साथ चित्रित किया है । विधवा को विधवा होने की किंमत कैसी चूकानी पडती है, इसका वर्णन विस्तार से किया है । `अश्क` जी ने निम्न मध्य वर्ग की लडकियों के बारेमें कहते है, " इससे अलग भाग्य निम्न मध्यवर्ग की लडकियों का नहीं है । जाने कब होगा ? शायद तब,जब वे सचमुच आजाद होगी और भेड-बकरियों की अपेक्षा उनकी स्थिति भिन्न होगी । एक झाटका-एक पुरजोर झाटका और निम्न-मध्यीवर्ग को इस तंग घेरे में बाँधे रखने वाली दीवारें ढह जायँगी । " १

अश्क जी ने निम्न मध्य वर्ग की लडकियों के बारेमें कितना कुछ कहा है । `अश्क` जी लडकियों की आजादी के समर्थक है । आर्थिक विषमता आदि अनेक कारणों से निम्न मध्य वर्ग की लडकियों का ब्याह विधुर,अधेड,कुपात्रों से होता है और ये लडकियाँ भी बीना आक्रोश के ये सब चुपचाप सहती हैं । उनका कहना है कि सब बँधनों को तोड कर उन्हें आजाद कर देना चाहिए ।

चाचा फकीरचन्द के विवाह का किस्सा बताया गया है। उनके एक एक आँख में फूली होने के कारण उमर के चालीस साल तक शादी नहीं हो

१ शहर में घूमता आईना - `अश्क` - पृ.११२ ।

पाती । एक दिन चेतन के पिता को पता चलता है कि एक लड़की कुंवारी माता बन गयी है और उसके पिता किसी जरूरत मन्द की तलाश में हैं । तब पं.शादी-राम को अपने मित्र फकीरचन्द की याद हो आती है । बच्चा होने के बाद उस बच्चे को अनाथालय में छोड कर उस लड़की के साथ चाचा फकीरचन्द का ब्याह होता है । चाचा फकीरचन्द की ओवी कारूप- लावण्य देखकर चेतन भी अश्चर्य चकीत होता है ।

दूसरा किस्सा मागो ऊर्फ मागवंती का बताया गया है । बचपन में माता-पिता गुजर जाने के बाद चाचा की छत्र-छाया में पली । जी-तोड कर मेहनत करके छत्र-छाया की कीमत चुकानी पडी । जब जवान हो गयी तो चाचा ऐसी श्रमशिल लड़की बीना कुछ पाये किसी को सौंपने तैयार नही थे । जब कोई न मिला तो एक दिन शहर में किसी जरूरत मन्द के हाथों सौंपने के लिए चाचा मागो को लेकर आते है । यह पता शादीराम को चलता है । उनके मित्र मुकंदीलाल के मार्इ की उन्हें याद आती है । कुछ देकर मागो की शादी धर्मचन्द से होती है । धर्मचन्द चालिस का और मागो बास बाईस वर्ष की होता है । दो बच्चे हो जाने के बाद एक दिन धर्मचन्द हाय का बीमारी में चल बसता है । बाद विधवा मागो देवर मुकनीलाल के हवस का शिकार होती है । एक दिन तेलू के साथ बच्चों समेत भाग जाती है । कुछ दिन बाद मुहल्ले में वापिस आती है तब ब्राह्मण के घर घूस जाने के कारण खत्री बिरादरी वालों के अत्याचार का शिकार बनती है ।

मागो के बारेमें अश्क जी सोचते हैं उसका बचपन कितने अभावा में बीता,जवानी कैसे अभाव में बीती,पति मिला तो अधेड ,उस पर दमे का मरीज, सगे-सम्बन्धी टुच्चे और कमीने,फिर वह तेलू के साथ भाग गयी तो क्या बुरा किया ? धर्मचन्द कोई लाखों की जायदाद तो छोड न गये थे । वह शन्नों के जूते सहती,अधेड देवर के वासना का शिकार बनती तो दो रोटी खाती । अपने समवयस्क,मनचीते आदमी के साथ (वह ब्राह्मण ही सही) भाग गयी तो क्या बुरा किया उसने ? यदि वह किसी खत्री के घर बैठ जाती तो शायद शरीके

को उतनी तकलीफ न होती । लेकिन क्या नारी की भी कोई जाति होती है, नदी या धरती की कोई जाति होती है ...' [१]

रामदित्ते हलवाई का भी किस्सा मनोरंजन पूर्ण होते हुए बडा ही दु:ख दायी भी है। पहली पत्नी के मृत्यु के बाद दूसरी बार शादी करने के लिए कितनी परेशानी उठानी पडी । बिलगावासियों से शगुन का रूपया लेकर शादी तय हो गयी तो पंडित गुरदासराम झूठ बोल कर रिश्ता तोड देता है । रामदित्ता अन्त में विधवा आश्रम से विधवा ब्याह कर घर लाता है । तो वह भी एक दिन कीमती गहने कपडे लेकर चम्पत होती है ।जिसके कारण रामदित्ता पागल सा बन जाता है ।

कवि 'हुनर' के भाई गोपलदास का किस्सा कुछ अलग ही है । कवि हुनर भाई के शादी में चढाव पर भाई के दुल्हन के गहनों के अलावा अपने तथा दूसरे भाई के पत्नी के गहने भी रख देता है और दुल्हन एक दिन रहकर मायके चली जाती है तो फिर वापिस नहीं आती । और यह घोषणा करती है कि दुल्हा नपुंसक है । बेचारे कवि हुनर के पीछे कोर्ट-कचहरी का चक्कर लग जाता है ।

शन्नो अपने पति के होते हुए भी कुंवारे देवर मुकन्दीलाल से संबंध रखती है और विधवा होने के बाद डंके के चोट पर उसी देवर को हो जाती है । इतना होते हुए भी मुहल्ले में जाँघ का घाव लेकर सीना तान कर के जीती है ।

दूसरे विधवाएँ,जैसे की माँ प्रसन्न कुमारी आदि पूजा पाठ करती है, साधु सन्तो से संबंध रखना उनको घर बुलाना,बाह्य संबंधो के कारण अन्त में जर्जर रोगों से ग्रस्त होकर तडप-तडप के मरती है ।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जी ने 'शहर में घूमता आईना' उपन्यास में निम्न

---

१ शहर मे घूमता आईना -' अश्क ' पृ.३३३-३३४ ।

मध्य वर्ग की वैवाहिक समस्याओं का यथार्थ रूप से चित्रण किया हैं। किस प्रकार निम्न मध्य वर्ग अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त हैं । शादी-ब्याह के मामले कितने जटिल बन गये हैं । निम्न मध्य वर्ग की लड़कियों का किस प्रकार बलि चढाया जाता हैं । बाद उनको किन-किन संकटों का सामना करना पड़ता है,आदि अनेक समस्याओं का यथार्थ रूप देखने को मिलता हैं ।

गुण्डा-गर्दी --

` शहर में घूमता आईना` उपन्यास का दो पहर का परिच्छेद ही गुण्डों से आरंभ होता हैं ।देबू, जगना, बिल्ला और प्यारू ऊर्फ प्यारेलाल आदि गुण्डें होने उत्तरदायित्व समाज के संकीर्ण वातावरण को है, जिनके कारण ये निकम्मे रह कर गुण्डा गर्दी करते रहते हैं । बात-बात पर लड़ाई - झगड़ा करना इनकी आदत-सी बन गयी हैं । लेखक ने इन गुण्डों की आपबीती चेतन द्वारा सुनायी हैं ।

चेतन ,हुनर,निरतर और रणवीर खालसा होटल में खाना खाने के लिए जाते है, तब सामने देबू,जगना और बिल्ला को देखकर चेतन का माथा ठनकता है और वह सोचता है कि ये तीनों जब एक जगह और वहाँ लड़ाई-झगड़ा न हो यह कैसे संभव हैं । बिना मतलब के लड़ाई-झगड़ा करने में इनको मजा आता हैं । राह चलते किसी अजनबी व्यक्ति से बेतुकी हसी-मजाक करना तो इनका रोज की आदत-सी बन गयी हैं । पीछे से जाकर उसकी टोपी उछालना या झापड़ मारकर गिरना और बाद में दोस्त समझकर गलती हो गयी का नाटक करने में ये लोग अपने आप को बहूत बड़े ॲक्टर समझते हैं । पीटने और पिटाने में इन लोगों को मजा आता हैं । खालसा होटल में बैठने के लिए खाली जगह न होने के कारण देबू तीन बैठे युवकों के पास जाकर उनको चारपाई खाली करने का आदेश देता हैं । जब वह इन्कार करते है तब देबू उनमें से एक की पीटाई करता हैं । इसमें बिल्ला भी अपने-आप को शरीक कर लेता हैं । लेखक कहता है कि समाज भी किस तरह बीन पैसों के तमाशा का मनोरंजन लेता है --" और पलक झपकते चार पाइयाँ खाली हो गयी । होटल के अन्दर खाना खाते हुए,रास्ता चलते हुए,सब लोग उधर पिल पड़े ।

जिन्दगी के घोर संघर्ष अथवा घोर बेकारी, सुस्ती या बेजारी के मारे निम्न-मध्यवर्गीय क्षण भर को तमाशा देखने आ जुटे ... ।[१]

लेखक इस गुण्डा-गर्दी का उत्तरदायित्व समाज को ही देता है। कैसे ये मूर्ख गुण्डे, गुण्डे पन को अपना कर, समाज से लाभ उठाकर, अपने भावी जीवन को स्वर्णिम बनाना चाहते हैं। बात-बात पर लड़ाई - झगड़ा करना, बेतुकी हँसी-मजाक करना, गन्दे अश्लील टप्पे गाना, चोरी करना और पकड़े जाने पर पुलिस को खूब रिश्वत देकर छूट जाना यह इन मूर्खों को मामूली बात लगती है। लेखक इन सभी बातों का विचार करने के बाद इसका पूरा दोष सामाजिक व्यवस्था को देता है।

राजनीति --

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जी ने स्वतंत्रतापूर्व के राजनीति का चित्रण किया है। राष्ट्रीय आन्दोलन और उनके नेताओं का चित्र खिंचा है। लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे नेता का परिचय दिया है कि किस प्रकार उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलनों में अनेक प्रकार की यातनाएँ भुगती हैं। तब कहीं जाकर स्वराज्य मिला है। और जब स्वराज्य मिल जाता है तब सेठ हरदर्शन जैसे पूँजीपति सेठ, साहुकार लोग धन के बल पर गरीब जनता और उन के सच्चे नेता का हक्क किस प्रकार उड़ा ले जाते है इसका चित्रण किया है।

'अश्क' जी ने लाला गोविन्दराम के स्वदेशी आन्दोलन में किये हुए कार्य से परिचित करवाया है कि किस प्रकार भवानीराम सुनार विदेशी वस्तुओं से प्रेम करता था मगर लाला गोविन्दराम के हठ के सामने उसे अपनी सिर की पगड़ी उतार कर देनी पड़ी। दूसरा किस्सा बताया है कि महात्मा गांधी की सभा और जुलूस का महात्मा गांधी के जाने के बाद 'बल' नामक अंग्रेज जिलाधीश ने सभा को गैरकानूनी करार कर दिया। और बाकियों पर डण्डे बरसवा दिये।

---

१ शहर में घूमता आईना - 'अश्क' पृ.११४।

तब लाला गोविन्दराम ने इन कचहरी के सामने धरना दे दिया । तब उन्हें बड़ी बेदर्दी से पीटा गया और घसीट कर पुलिस की गाड़ी में ले जाया गया । तब महात्मा गांधी ने रात को मरी सभा में लाला गोविन्दराम की वीरता और कर्तव्य-निष्ठा की प्रशंसा की थी । लोगों ने भी ' महात्मा गांधी की जय ' के साथ ' लाल गोविन्दराम की जय ' के घोष से आसमान गुंजा दिया ।

' अश्क ' जी को दु:ख होता है कि स्वराज्य मिल गया मगर सत्ता गरीबों के बजाय पूँजीपतियों के हाथ लग गयी इसका उन्हें क्षोभ है । ' अश्क ' जी वीरसेन के द्वारा कहते हैं " क्रान्ति ... क्रान्ति ... क्रान्ति, हिन्दुस्थान की सभी बीमारियों का एक मात्र इलाज है । कांग्रेस ' इन्कलाब जिन्दाबाद ' चिल्लाती है, पर ये लोग इन्कलाब नहीं चाहते । इन्कलाब का मतलब है - ' नीचे का ' उपर ' । सत्ता उन लोगों के हाथ में आ जाय, जो सदियों से गरीबी, मुफलसी, बेरोजगारी, अशिक्षा और गुलामी के पाटों में पिसे जा रहे हैं । क्रान्ति वह, जैसे रूस में हुई, जिसमें सत्ता सचमुच गरीबों और मजदूरों के हाथ में आयी । यह क्रान्ति नहीं होगी, समझौता होगा । ये लोग सरकार से समझौता कर रहे हैं । असेम्बलियों में जाने की सोच रहे हैं । इससे इन्कलाब होगा ? हरगिज नहीं । एक देश के व्यापारियों का दूसरे देश के व्यापारियों से समझौता होगा । देखने के लिए चाहे जनता के नेता असेम्बलियों में जायेंगे, लेकिन असली सत्ता पूँजीपतियों से हाथ ही में होगी । तुम देख लेना ।...." [१]

' अश्क ' जी ने सच ही कहा है कि सिर्फ देखने देखने के लिए सत्ता गरीब वोटरों की है मगर उनके नेता पूँजीपति हैं । वे लोग इन गरीबों का हक छीन रहे हैं । लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे देश भक्त नेताओं ने देश के आन्दोलन में घर संसार की आहुती दी । मगर जब उनका हक मिलने का समय आया तो पूँजीपतियों ने उसे छीन लिया ।

---

१ शहर में घूमता आईना - अश्क - पृ.३५२ ।

निष्कर्ष

उपेन्द्रनाथ जी का' शहर में घूमता आईना' उपन्यास यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है। लेखक ने चेतन द्वारा निम्न मध्यवर्गीय समाज का चित्रण बडी सुक्ष्मता से खिंचा है। चेतन वह आईना है जो स्वतंत्रता पूर्व निम्न मध्य वर्गीय समाज का प्रतिबिम्ब बन गया है। निम्न मध्य वर्गीय जीवन की घुटन, कुण्ठा, निराशा, गरीबी, मानसिक असन्तुलन, संकीर्णता, स्वार्थ, शोषण आदि से भरा पडा है। अनेक प्रकार के चरित्र है जिनमें शोषक भी है और शोषित भी है। निम्न मध्य वर्ग की नारी भी सामाजिक विकृतियों से ग्रसित है। अनमेल विवाह, रोग, गरीबी, अस्थिरता, अशिक्षा, आदि अनेक कारणों से बेबस है। लडाई-झगडे, निन्दा, चुगली, अनैतिकता में व्यस्त है। अनेक प्रकार के अलग अलग पात्र अपनी अपनी समस्याएँ लिये सामने आते है। निम्नमध्य वर्गीय समाज का चित्रण बडा सुक्ष्म और वास्तव रूप में चित्रित हुआ है।

लेखक ने इस उपन्यास में कथाओं की प्रदर्शनी-सी लगा दी है। जिनमें उन कथाओं का आपस में किसी भी प्रकार का ताल-मेल नहीं दिखायी देता। हर कथा अपने आप में अपना अलग अस्तित्व रखती है। प्रसंग में आनेवाली समाओं में अनंत, बद्दा, रामदित्ता, पं. गुरदासराम, देबू, प्यार, जगना, हकीम दीनानाथ, हमीद, चाचा, फकीरचन्द, निश्तर, हुनर, योगी जालंधरी मल, महात्मा वंशीराम, लालू, अमरनाथ, मुकन्दीलाल, शन्नों, मागो और तेलू आदि की उपकथाएँ है। लेखक ने इन कथाओं को चेतन द्वारा स्मृति रूप में दिखायी गयी है।

चरित्र-विधान की दृष्टि से' शहर में घूमता आईना' उपन्यास की परख की जाय तो निम्न मध्य वर्ग के शहरी जीवन को बडे सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।' अश्क' जी चरित्र-चित्रण की कला में सिध्दहस्त उपन्यासकार है [यद्यपि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है, फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के अंतर बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में पूरी सफलता पायी है। नायक चेतन वह' आईना' है जिस पर जालंधर शहर का प्रतिबिम्ब चल चित्र की भाँति

उभरता गया है । चेतन उन सारे निम्न मध्य वर्गीय तरूणों का प्रतिबिम्ब है । जो किसी-न-किसी कारण से अपने को निराश और टूटा हुआ पाते हैं । वे कुण्ठा, निराशा, घुटन, तथा विषमता के उस वातावरण में अपने को मिश्रित पाते हैं । जहाँ दम घुट रहा है और वे निरूद्देश्य भटकते हुए दिखायी पड़ते हैं । इन वास्तविक दृश्यों को अवांछित विस्तार दे दिया हैं । नायक चेतन लेखक के इशारों पर नाचती हुई कठ पुतली बन गया है ।

'शहर में घूमता आईना' उपन्यास 'गिरती दीवारें' उपन्यास की अगली कड़ी हैं। इन दोनों की तुलना की जाय तो निम्न मध्यवर्गीय समाज तथा आर्थिक समस्याओं का प्रश्न, उपन्यास में प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं हाँ परोक्ष रूप में निरूपण अवश्य मिलता हैं । गिरती दीवारें में इन समस्याओं का वर्णन विस्तार से मिलता हैं । गिरती दीवारे का नायक चेतन 'शहर में घूमता आईना' में आकर जीवन के संघर्षों से तटस्थता प्राप्त कर लेता हैं । उसे निम्न मध्य वर्ग का भाग्यवादी पात्र ही कहना उचित होगा । जो अंत तक अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढने में असमर्थ हैं । उपन्यास चेतन के अन्त द्वन्द्व से परिपूर्ण हैं । वह उन पात्रों के चरित्र चित्रण के द्वारा जो 'गिरती दीवारें' में छूट गये थे अपना पार्ट अदा कर रहा है ।' शहर में घूमता आईना' को नायक चेतन के व्यक्तित्व के निर्माण की दृष्टि से उपन्यासकार की विशेष उपलब्धि कहना अतियुक्ति ही होगा ।

उद्देश्य की दृष्टि से यदि उपन्यास की परख की जाय तो लेखक ने आपबीती का कथन चेतन के माध्यम से किया हैं । साथ ही निम्न मध्य वर्ग की अनेक प्रकार की समस्याओं को चित्रित करने में पूर्ण सफलता पायी हैं । साथ ही अनेक प्रकार की समस्याएँ और उन्हें हल करने के तरीके भी बताने की कोशिश की है । उदाहरण के तौर पर अनमेल विवाह, कुपात्रों के से विवाह, या विधुरों से विवाह होने के कारण निम्न मध्य वर्ग की लड़कियों की स्थिति मेड-सर्वेन्टों

जैसी है, अगर इसमें परिवर्तन लाना है तो नारी को पहले आजाद करना है। लेखक निम्न मध्य वर्ग की नारियों की आजादी का पूर्णत: समर्थक है। साथ ही नायक चेतन अनेक विषमताओं ग्रस्त होने पर भी सामाजिक विकृतियों के प्रति उदासीन नहीं हो पाता। वह आधुनिक युग के नव युवक वर्ग की चेतना का उपयुक्त प्रतिनिधि है। उसे सामाजिक विकृतियों से कितना भी संघर्ष क्यों न करना पड़ा, वह अपने लक्ष्य पर निरन्तर अग्रसर होता रहा। उसकी इस प्रगतिशीलता ने आधुनिक युवा पीढ़ी को सजगता का संदेश दिया है।